

तरलता की चाह

माला राधाकृष्णन

मैं और मेरे असंख्य समरूप सहोदर
इतनी ऊँचाई से नज़ारे का लुत्फ़ उठाते हैं,
हरेक नाइट्रोजन युगल के रूप में उड़ता-फिरता है
और हम हवा का अस्सी फ़ीसद बनाते हैं।



लेकिन कभी-कभी होती है ऊब, यहाँ ऊँचाई पर
गैसीय वायुमण्डल के हिस्से के रूप में उतराने में,
हालाँकि मैं सचमुच शिक़ायत न करता
यदि यहाँ निपट अकेलापन न होता।

चूँकि हम गैस हैं, इसलिए हक़ीक़त यही है कि
हमारे अणु बिरले ही टकराते हैं,
हमारे घनत्व का मान इतना कम है कि
हम अन्तरआणविक दोस्तियाँ बहुत कम ही पनपाते हैं।



और यदि संयोग से दो आत्माएँ जो टकरा गईं
तो बग़ैर किसी शोरगुल के वे फिर दूर-दूर हो जाती हैं,
कोई गुफ़्तगू नहीं, मौसम की कोई बातें नहीं
साथ-साथ खिलने, साथ-साथ बढ़ने की कोई कोशिश नहीं।

लेकिन एक दिन मुझे एक नायाब मौक़ा मिला
अपने बेतरतीब आणविक नृत्य की आपाधापी में,
H_2O के एक अणु से बस इतनी देर बतियाने का
कि मुझे एक अविश्वसनीय बात पता चली।

उसने कहा कि उसके कुछ यार थे
जिनसे वह चिपका रहता था
एक ऐसी चीज़ में तैरते हुए जिसे उसने ‘द्रव’ कहा,
“द्रव में सब लोग थोड़े-थोड़े पास-पास रहते हैं
क्या तुम कभी द्रव के हिस्से रहे हो?”
“नहीं जनाब।”

उसने मुझे घूरा, "तुम क्या उम्मीद करते हो?
तुम्हारे पास मज़बूत हत्थे भी तो नहीं हैं जिनसे एक-दूसरे को पकड़ सको!
हाइड्रोजन बन्धन तो तुम यक़ीनन नहीं बनाओगे;
तुम्हारे पास ध्रुवीकृत 'H' जो नहीं हैं, भले मानुस!

यदि द्रव बनना सचमुच तुम्हारा मक़सद होता
तो किसी तरह का द्विध्रुव होने से मदद मिलती,
या शायद तुम साइज़ में बड़े होते
ताकि परिक्षेपण क़िस्म के बल तुम्हारे
बन्धनों का निर्देशन करते।

लेकिन तुम्हें जिन दोस्तियों की ख़्वाहिश है
वे, बहुत हुआ तो, कमज़ोर ही रहेंगी
अफसोस कि तुम्हारे अन्तरआणविक बल,
बहुत कम हैं, और इसीलिए तुम गैस हो।

लेकिन रुको, एक उम्मीद है! तथ्य है कि
यह इस बात पर भी निर्भर है कि तापमान कितना है,
जितनी ज़्यादा ऊष्मीय ऊर्जा होगी
उतने ही ज़्यादा तुम इधर-उधर भटकोगे और आज़ाद रहोगे।

लेकिन जब ठण्ड, सचमुच की ठण्ड होती है
तब कमज़ोर बल भी (अणुओं को) थाम लेते हैं,
तो किसी ठण्डी जगह पर जाओ, और
तब तुम तरल नाइट्रोजन बन जाओगे।"

और जितनी तेज़ी से हमारी बातचीत शुरू हुई थी,
उतनी ही फ़ुर्ती से उसने कहा, "अलविदा, अब मुझे जाकर संघनित होना पड़ेगा।"



लेकिन उसने मुझे अपने गैसीय हाल
का कारण समझा दिया था :
मेरी दोस्ती की परिस्थिति आदर्श नहीं थी।

देखो, कई लोग आसानी से कई दोस्तियाँ बना लेते हैं,
किसी फ्रीज़ की मदद के बग़ैर।
मेरे लिए, कुछ दोस्त होने का मतलब साफ़ था
कि मुझे एक अलग पर्यावरण की ज़रूरत थी।

हो सकता है कई लोग सूरज और गर्मी के सपने देखें
मैं उन असंख्य दोस्तों के ख़्वाब देखता हूँ जो मुझे मिलेंगे,
कैसे मैं लोकप्रिय हो जाऊँगा, सबका हीरो बनूँगा
शून्य से दो सौ डिग्री सेल्सियस नीचे।

मैं सचमुच चाहता हूँ कि यह परिवर्तन बहुत भयानक न हो
अभी, इसी वक़्त दोस्त मिलना अद्भुत होगा,
तो यदि आप उनमें से हैं जो आसानी से घुलमिल सकते हैं
तो हमसे भी दोस्ती करने की कोशिश कीजिए...प्लीज़?

Notes:

1. This poem was first published in Mala Radhakrishnan's poetry collection 'Atomic Romances, Molecular Dances' and is included in this issue of i wonder... with her permission.
2. Source of the image used in the background of the article title: Poem. Credits: Idearriba, Pixabay. *URL: https://pixabay.com/photos/poem-butterfly-literature-tale-1104997/. License: CC0.*
3. The three illustrations for this poem were conceptualised & created by Vidya Kamalesh (Artist, i wonder...) & Chitra Ravi (Editor, i wonder...). To reuse, please include following details: Credits: i wonder..., Jun 2022 issue. License: CC-BY-NC.



माला राधाकृष्णन एक वैज्ञानिक-कवि हैं। वे वेल्लेस्ले कॉलेज, यूएसए के रसायन विभाग में एक प्रोफ़ेसर के तौर पर काम करती हैं। दो दशकों से वे रसायनशास्त्र विषय पर कविताएँ लिख रही हैं और कविता-पाठ कर रही हैं। उनकी कविताओं की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनसे mradhakr@wellesley.edu पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुशील जोशी